

उमरिया जिले में अनुसूचित जाति की छात्राओं पर उच्च शिक्षा का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. पिकी सोमकुंवर

Author Affiliation:

सहायक प्राध्यापक-समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म. प्र.)

Citation of Article: सोमकुंवर, पिकी. (2026). उमरिया जिले में अनुसूचित जाति की छात्राओं पर उच्च शिक्षा का प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. International Journal of Classified Research Techniques & Advances (IJCRTA) ISSN: 2583-1801, 6 (1), pg. 81-92. ijcrta.org

DOI: 10.5281/zenodo.19420455

सारांश:

यह शोध पत्र मध्यप्रदेश के उमरिया जिले में अनुसूचित जाति की छात्राओं पर उच्च शिक्षा के प्रभाव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज में अनुसूचित जाति वर्ग की महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक वंचनाओं का सामना करना पड़ा है। उच्च शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन एवं सशक्तिकरण का एक प्रभावी साधन माना जाता है, विशेषकर हाशिए पर स्थित समुदायों के लिए। इस अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि उच्च शिक्षा अनुसूचित जाति की छात्राओं के जीवन में किस प्रकार सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन लाती है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। 100 छात्राओं के नमूने के आधार पर यह पाया गया कि उच्च शिक्षा से आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, आर्थिक अवसर एवं सामाजिक सम्मान में वृद्धि होती है। हालांकि, आर्थिक समस्याएँ, पारिवारिक दबाव एवं सामाजिक रूढ़ियाँ अभी भी प्रमुख बाधाएँ हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि उच्च शिक्षा अनुसूचित जाति की छात्राओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, किन्तु इसके प्रभाव को व्यापक बनाने के लिए नीतिगत सुधार एवं जागरूकता आवश्यक है।

प्रस्तावना:

भारतीय समाज की संरचना ऐतिहासिक रूप से जाति, वर्ग एवं लिंग पर आधारित रही है, जिसके परिणामस्वरूप समाज के कुछ वर्गों को विशेषाधिकार प्राप्त हुए, जबकि कुछ वर्ग लंबे समय तक वंचना एवं असमानता का सामना करते रहे। इन वंचित वर्गों में अनुसूचित जाति विशेष रूप से उल्लेखनीय है, और यदि इसमें अनुसूचित जाति की महिलाओं की स्थिति पर विचार किया जाए, तो यह और भी जटिल एवं संवेदनशील हो जाती है। अनुसूचित जाति की छात्राएँ न केवल जातिगत भेदभाव का सामना करती हैं, बल्कि वे लैंगिक असमानता एवं आर्थिक अभाव की त्रिस्तरीय चुनौतियों से भी जूझती हैं। इस प्रकार, उनकी स्थिति को “बहुस्तरीय वंचना” (Multiple Marginalization) के रूप में समझा जा सकता है। ऐसे परिदृश्य में शिक्षा, विशेषकर उच्च शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन एवं सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरती है। उच्च शिक्षा न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि यह व्यक्ति में आत्मविश्वास, स्वतंत्र चिंतन, निर्णय लेने की क्षमता एवं सामाजिक जागरूकता का विकास भी करती है। अनुसूचित जाति की छात्राओं के लिए उच्च शिक्षा का महत्व और भी अधिक हो जाता है, क्योंकि यह उन्हें सामाजिक संरचना में अपने स्थान को पुनः

परिभाषित करने और मुख्यधारा में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान करती है। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान ने सामाजिक न्याय, समानता एवं शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए अनेक प्रावधान किए हैं। इसके अतिरिक्त, सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं एवं नीतियों के माध्यम से अनुसूचित जाति वर्ग, विशेषकर छात्राओं को शिक्षा के क्षेत्र में प्रोत्साहित किया गया है। छात्रवृत्ति योजनाएँ, आरक्षण व्यवस्था, निःशुल्क शिक्षा, छात्रावास सुविधाएँ एवं नई शिक्षा नीति 2020 जैसे प्रयासों ने उच्च शिक्षा तक पहुँच को विस्तारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तथापि, इन प्रयासों के बावजूद सामाजिक रूढ़ियाँ, आर्थिक सीमाएँ एवं पारिवारिक दबाव अभी भी अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षणिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करते हैं।

मध्यप्रदेश का उमरिया जिला सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से एक पिछड़ा क्षेत्र माना जाता है, जहाँ शिक्षा के संसाधनों की सीमित उपलब्धता एवं जागरूकता का अभाव एक प्रमुख समस्या है। यह जिला आदिवासी बहुल होने के साथ-साथ अनुसूचित जाति के समुदाय की भी उल्लेखनीय उपस्थिति रखता है। यहाँ की अनुसूचित जाति की छात्राओं के लिए उच्च शिक्षा तक पहुँच अनेक चुनौतियों से प्रभावित होती है, जैसे—आर्थिक कठिनाइयाँ, परिवहन की समस्या, शैक्षणिक संसाधनों की कमी एवं सामाजिक प्रतिबंध। इसके बावजूद, हाल के वर्षों में शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है, और अधिक संख्या में छात्राएँ उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही हैं।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि उमरिया जिले की अनुसूचित जाति की छात्राओं के जीवन में उच्च शिक्षा किस प्रकार सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन ला रही है। यह अध्ययन न केवल उच्च शिक्षा के सकारात्मक प्रभावों को उजागर करता है, बल्कि उन बाधाओं एवं चुनौतियों को भी रेखांकित करता है, जो छात्राओं के सशक्तिकरण में अवरोध उत्पन्न करती हैं। साथ ही, यह शोध नीति-निर्माताओं एवं शिक्षाविदों के लिए उपयोगी सुझाव भी प्रस्तुत करता है, जिससे अनुसूचित जाति की छात्राओं की शिक्षा को और अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाया जा सके। अतः यह अध्ययन समकालीन समाज में अनुसूचित जाति की छात्राओं की स्थिति को समझने एवं उच्च शिक्षा के माध्यम से उनके सशक्तिकरण की संभावनाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

साहित्य समीक्षा:

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने शिक्षा को अनुसूचित जाति की वर्ग के उत्थान का सबसे प्रभावी साधन माना। उनका प्रसिद्ध कथन “शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो” आज भी प्रासंगिक है। गोपाल गुरु (2009) ने अनुसूचित जाति की महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा उनके आत्मसम्मान और पहचान को सुदृढ़ करती है। सुनीता नारायण (2012) के अनुसार, उच्च शिक्षा महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में। यूजीसी (2018) की रिपोर्ट में यह पाया गया कि अनुसूचित जाति की छात्राओं की उच्च शिक्षा में भागीदारी बढ़ी है, लेकिन ड्रॉपआउट दर अभी भी अधिक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी समावेशी शिक्षा पर बल दिया है, जिसमें कमजोर वर्गों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, लेकिन इसकी पहुँच और प्रभाव विभिन्न सामाजिक कारकों पर निर्भर करता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

इस अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं -

1. उमरिया जिले की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. छात्राओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. उच्च शिक्षा में आने वाली बाधाओं की पहचान करना।

परिकल्पना:

इस शोध हेतु निम्न दो परिकल्पना निर्धारित की गई हैं

1. उच्च शिक्षा अनुसूचित जाति की छात्राओं के सशक्तिकरण में सकारात्मक भूमिका निभाती है।
2. आर्थिक एवं सामाजिक बाधाएँ उच्च शिक्षा की पहुँच को प्रभावित करती हैं।

अनुसंधान विधि:

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र मध्यप्रदेश का उमरिया जिला है, जो राज्य के पूर्वी भाग में स्थित एक सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा जिला माना जाता है। यह जिला मुख्यतः आदिवासी एवं अनुसूचित जाति बहुल क्षेत्र है, जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत सीमित है। उमरिया जिले की भौगोलिक संरचना ग्रामीण प्रधान है, जिसके कारण यहाँ के अधिकांश निवासियों का जीवन कृषि एवं असंगठित क्षेत्र पर आधारित है। सामाजिक संरचना में परंपरागत मान्यताएँ एवं रूढ़ियाँ अभी भी प्रभावी हैं, जो विशेष रूप से महिलाओं एवं अनुसूचित जाति की समुदाय के विकास को प्रभावित करती हैं। शैक्षणिक दृष्टि से देखा जाए तो उमरिया जिले में उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या सीमित है, फिर भी विगत वर्षों में शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है। विशेष रूप से अनुसूचित जाति की छात्राओं में उच्च शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ा है, जो सामाजिक परिवर्तन का संकेत है। इस पृष्ठभूमि में उमरिया जिला के अनुसूचित जाति की छात्राओं पर उच्च शिक्षा के प्रभाव के अध्ययन के लिए एक उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करता है। इस अध्ययन के लिए उमरिया जिले के कुल 7 शासकीय महाविद्यालयों में से 5 महाविद्यालयों का चयन किया गया, ताकि विभिन्न भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व किया जा सके। चयनित महाविद्यालय निम्नलिखित हैं:

1. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उमरिया
2. शासकीय आदर्श महाविद्यालय, उमरिया
3. शासकीय महाविद्यालय, मानपुर
4. शासकीय महाविद्यालय, नौरोजाबाद
5. शासकीय महाविद्यालय, चंदिया

इन महाविद्यालयों का चयन इस आधार पर किया गया कि ये जिले के विभिन्न क्षेत्रों (शहरी एवं ग्रामीण) का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा इनमें अनुसूचित जाति की छात्राओं की पर्याप्त संख्या अध्ययन के लिए उपलब्ध है।

प्रस्तुत अध्ययन में महाविद्यालयों का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि का उपयोग किया गया है। इस पद्धति के अंतर्गत केवल उन छात्राओं को चयनित किया गया, जो अनुसूचित जाति (SC) वर्ग से संबंधित हैं और उच्च शिक्षा

(स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर) में अध्ययनरत हैं। प्रत्येक चयनित महाविद्यालय से 20 अनुसूचित जाति की छात्राओं का चयन यादृच्छिक नमूनाकरण के माध्यम से किया गया। जिससे कुल नमूना आकार निम्न प्रकार रहा:

$$5 \text{ महाविद्यालय} \times 20 \text{ छात्राएँ} = 100 \text{ छात्राएँ}$$

आकड़ों का विश्लेषण:

प्रस्तावित शोध में आवश्यक तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक और द्वितीयक, दोनों प्रकार के स्रोतों का सहारा लिया गया है, प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु एक पूर्वनिर्धारित एवं सुव्यवस्थित साक्षात्कार अनुसूची (Interview Schedule) तैयार की गयी जिससे प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण निम्नानुसार है -

तालिका 1: आयु वर्ग

| आयु वर्ग | संख्या | प्रतिशत |
|----------|--------|---------|
| 18-20 | 42 | 42% |
| 21-23 | 38 | 38% |
| 24-26 | 15 | 15% |
| 26+ | 5 | 5% |

तालिका 1 से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राएँ (80%) 18-23 आयु वर्ग में हैं, जो दर्शाता है कि उच्च शिक्षा में युवा वर्ग की भागीदारी अधिक है।

तालिका 2: निवास स्थान

| निवास | संख्या | प्रतिशत |
|---------|--------|---------|
| ग्रामीण | 68 | 68% |
| शहरी | 32 | 32% |

तालिका 2 से स्पष्ट है कि अधिकतर छात्राएँ ग्रामीण क्षेत्र से हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं में भी उच्च शिक्षा की पहुँच बढ़ रही है।

तालिका 3: वैवाहिक स्थिति

| स्थिति | संख्या | प्रतिशत |
|----------|--------|---------|
| अविवाहित | 82 | 82% |
| विवाहित | 18 | 18% |

तालिका 3 से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राएँ अविवाहित हैं, जो शिक्षा में निरंतरता को दर्शाता है।

तालिका 4: अध्ययन स्तर

| स्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------------|--------|---------|
| स्नातक | 76 | 76% |
| स्नातकोत्तर | 20 | 20% |
| अन्य | 4 | 4% |

तालिका 4 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राएँ स्नातक स्तर पर हैं, जो उच्च शिक्षा के प्रारंभिक चरण को दर्शाता है।

तालिका 5: प्रथम पीढ़ी शिक्षार्थी

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 64 | 64% |
| नहीं | 36 | 36% |

तालिका 5 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 64% छात्राएँ प्रथम पीढ़ी की शिक्षार्थी हैं, जो शिक्षा के प्रसार का सकारात्मक संकेत है।

तालिका 6: परिवार का शिक्षा स्तर

| स्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| निम्न | 58 | 58% |
| मध्यम | 34 | 34% |
| उच्च | 8 | 8% |

तालिका 6 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राओं का पारिवारिक शिक्षा स्तर निम्न है, जिससे शिक्षा की चुनौतियाँ बढ़ती हैं।

तालिका 7: आत्मविश्वास में वृद्धि

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 74 | 74% |
| नहीं | 26 | 26% |

तालिका 7 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 74% ने बताया कि उच्च शिक्षा से उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है, जबकि 26% ने ऐसा अनुभव नहीं किया। यह परिणाम स्पष्ट करता है कि उच्च शिक्षा

छात्राओं के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। बढ़ा हुआ आत्मविश्वास उन्हें सामाजिक सहभागिता, निर्णय लेने की क्षमता तथा आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर करता है। हालांकि, 26% छात्राओं में आत्मविश्वास का अभाव यह संकेत देता है कि आर्थिक, पारिवारिक या सामाजिक बाधाएँ अभी भी प्रभाव डाल रही हैं, जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है।

तालिका 8: निर्णय क्षमता में सुधार

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 69 | 69% |
| नहीं | 31 | 31% |

तालिका 8 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 69% ने माना कि उच्च शिक्षा से उनकी निर्णय लेने की क्षमता में सुधार हुआ है, जबकि 31% ने इसमें कोई विशेष परिवर्तन अनुभव नहीं किया। यह परिणाम दर्शाता है कि उच्च शिक्षा छात्राओं में तार्किक सोच, आत्मविश्वास एवं स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करती है। इससे वे अपने व्यक्तिगत, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक जीवन में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगती हैं। हालांकि, 31% छात्राओं में सुधार का अभाव यह संकेत करता है कि सामाजिक एवं पारिवारिक प्रतिबंध अभी भी उनके व्यक्तित्व विकास को प्रभावित कर रहे हैं।

तालिका 9: सामाजिक सम्मान

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 71 | 71% |
| नहीं | 29 | 29% |

तालिका 9 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 71% ने बताया कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनके सामाजिक सम्मान में वृद्धि हुई है, जबकि 29% ने ऐसा अनुभव नहीं किया। यह परिणाम दर्शाता है कि उच्च शिक्षा समाज में छात्राओं की पहचान, प्रतिष्ठा एवं स्वीकार्यता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षित होने के कारण परिवार एवं समाज में उनके विचारों को अधिक महत्व दिया जाता है। हालांकि, 29% छात्राओं में सम्मान में वृद्धि न होना यह संकेत देता है कि सामाजिक रूढ़ियाँ और जातिगत पूर्वाग्रह अभी भी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुए हैं।

तालिका 10: स्वतंत्रता की भावना

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 73 | 73% |
| नहीं | 27 | 27% |

तालिका 10 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 73% ने अनुभव किया कि उच्च शिक्षा के कारण उनमें स्वतंत्रता की भावना विकसित हुई है, जबकि 27% ने ऐसा महसूस नहीं किया। यह परिणाम दर्शाता है कि उच्च शिक्षा छात्राओं को आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास तथा अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने की क्षमता प्रदान करती है।

इसके माध्यम से वे सामाजिक बंधनों से आंशिक रूप से मुक्त होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं। हालांकि, 27% छात्राओं में स्वतंत्रता का अभाव यह संकेत करता है कि पारिवारिक नियंत्रण, सामाजिक परंपराएँ एवं आर्थिक निर्भरता अभी भी उनकी स्वतंत्रता को सीमित कर रही हैं।

तालिका 11: रोजगार अवसर

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 62 | 62% |
| नहीं | 38 | 38% |

तालिका 11 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 62% ने माना कि उच्च शिक्षा से उनके लिए रोजगार के अवसर बढ़ें हैं, जबकि 38% ने ऐसा अनुभव नहीं किया। यह परिणाम दर्शाता है कि उच्च शिक्षा छात्राओं को कौशल, ज्ञान एवं योग्यता प्रदान कर रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाती है। इससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ती हैं। हालांकि, 38% छात्राओं द्वारा रोजगार अवसरों में वृद्धि न होना यह संकेत देता है कि क्षेत्रीय सीमाएँ, कौशल की कमी तथा रोजगार के सीमित अवसर अभी भी चुनौती बने हुए हैं।

तालिका 12: आत्मनिर्भरता

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 59 | 59% |
| नहीं | 41 | 41% |

तालिका 12 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 59% ने माना कि उच्च शिक्षा के माध्यम से वे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर हैं, जबकि 41% ने ऐसा अनुभव नहीं किया। यह परिणाम दर्शाता है कि शिक्षा छात्राओं में आर्थिक एवं मानसिक आत्मनिर्भरता विकसित करने में सहायक है, जिससे वे अपने भविष्य के प्रति अधिक जागरूक एवं सक्षम बनती हैं। हालांकि, 41% छात्राओं में आत्मनिर्भरता का अभाव यह संकेत करता है कि आर्थिक संसाधनों की कमी, सीमित रोजगार अवसर एवं पारिवारिक निर्भरता अभी भी उनकी प्रगति में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं।

तालिका 13: पारिवारिक सहयोग

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 66 | 66% |
| नहीं | 34 | 34% |

तालिका 13 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 66% को उनके परिवार से शिक्षा के लिए सहयोग प्राप्त हो रहा है, जबकि 34% को पर्याप्त पारिवारिक समर्थन नहीं मिल रहा। यह परिणाम दर्शाता है कि परिवार का सकारात्मक दृष्टिकोण छात्राओं की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। पारिवारिक सहयोग मिलने से छात्राएँ आत्मविश्वास के साथ अपनी पढ़ाई जारी रख पाती हैं। हालांकि, 34% छात्राओं को सहयोग न मिलना यह संकेत करता है कि पारंपरिक सोच, आर्थिक दबाव एवं लैंगिक असमानता अभी भी उनकी शिक्षा में बाधा बन रही है।

तालिका 14: आर्थिक समस्याएँ

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 68 | 68% |
| नहीं | 32 | 32% |

तालिका 14 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 68% ने बताया कि उन्हें अपनी शिक्षा के दौरान आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जबकि 32% ने ऐसी समस्या नहीं बताई। यह परिणाम दर्शाता है कि आर्थिक अभाव उच्च शिक्षा प्राप्त करने में एक प्रमुख बाधा है, जो फीस, अध्ययन सामग्री, परिवहन एवं अन्य आवश्यकताओं को प्रभावित करता है। आर्थिक कठिनाइयों के कारण कई छात्राएँ अपनी पढ़ाई जारी रखने में संघर्ष करती हैं। अतः यह आवश्यक है कि छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहायता योजनाओं को और अधिक प्रभावी बनाया जाए, ताकि छात्राओं की शिक्षा निर्बाध रूप से जारी रह सके।

तालिका 15: सामाजिक/पारिवारिक दबाव

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 57 | 57% |
| नहीं | 43 | 43% |

तालिका 15 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 57% ने बताया कि उन्हें शिक्षा के दौरान सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव का सामना करना पड़ता है, जबकि 43% ने ऐसी बाधा से इंकार किया। यह परिणाम दर्शाता है कि पारंपरिक मान्यताएँ, विवाह का दबाव, घरेलू जिम्मेदारियाँ एवं लैंगिक भेदभाव अभी भी छात्राओं की शिक्षा को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे दबाव उनके शैक्षणिक निरंतरता एवं प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। अतः आवश्यक है कि समाज में जागरूकता बढ़ाई जाए तथा परिवारों को छात्राओं की शिक्षा के महत्व के प्रति संवेदनशील बनाया जाए।

तालिका 16: संसाधनों की कमी

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 63 | 63% |
| नहीं | 37 | 37% |

तालिका 16 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 63% ने बताया कि उन्हें शैक्षणिक संसाधनों (जैसे पुस्तकें, इंटरनेट, अध्ययन सामग्री आदि) की कमी का सामना करना पड़ता है, जबकि 37% ने ऐसी समस्या से इंकार किया। यह परिणाम दर्शाता है कि संसाधनों की कमी उच्च शिक्षा की गुणवत्ता एवं निरंतरता को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण बाधा है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अतः आवश्यक है कि पुस्तकालय, डिजिटल संसाधन एवं इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार किया जाए, ताकि छात्राओं को बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध हो सके।

तालिका 17: छात्रवृत्ति लाभ

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 61 | 61% |
| नहीं | 39 | 39% |

तालिका 17 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 61% ने बताया कि उन्हें छात्रवृत्ति का लाभ प्राप्त हो रहा है, जबकि 39% छात्राएँ इससे वंचित हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि छात्रवृत्ति योजनाएँ उच्च शिक्षा में आर्थिक सहायता प्रदान कर छात्राओं को प्रोत्साहित करती हैं। इससे उनकी पढ़ाई जारी रखने में सुविधा मिलती है और आर्थिक दबाव कुछ हद तक कम होता है। हालांकि, 39% छात्राओं को लाभ न मिलना यह संकेत देता है कि योजनाओं की पहुँच, जानकारी की कमी या प्रशासनिक जटिलताएँ अभी भी बाधा बनी हुई हैं, जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है।

तालिका 18: योजनाओं की जानकारी

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 54 | 54% |
| नहीं | 46 | 46% |

तालिका 18 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 54% को विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी है, जबकि 46% छात्राएँ इन योजनाओं से अनभिज्ञ हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि योजनाओं की जागरूकता अभी भी संतोषजनक स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। जानकारी के अभाव के कारण अनेक छात्राएँ उपलब्ध सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पातीं, जिससे उनकी शैक्षणिक प्रगति प्रभावित होती है। अतः आवश्यक है कि महाविद्यालय स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम, परामर्श सत्र एवं सूचना प्रसार की प्रभावी व्यवस्था की जाए, ताकि अधिक से अधिक छात्राएँ इन योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकें।

तालिका 19: योजनाओं से सहायता

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 58 | 58% |
| नहीं | 42 | 42% |

तालिका 19 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 58% ने बताया कि उन्हें सरकारी योजनाओं से शिक्षा में प्रत्यक्ष सहायता मिली है, जबकि 42% ने ऐसी सहायता का अनुभव नहीं किया। यह परिणाम दर्शाता है कि योजनाएँ एक महत्वपूर्ण सहायक भूमिका निभा रही हैं, विशेषकर आर्थिक दबाव को कम करने और पढ़ाई जारी रखने में। हालांकि, 42% छात्राओं को अपेक्षित लाभ न मिलना यह संकेत देता है कि पहुँच, जागरूकता और क्रियान्वयन में अभी भी अंतराल मौजूद हैं, जिन्हें दूर करने के लिए लक्षित प्रयास आवश्यक हैं।

तालिका 20: महिला सशक्तिकरण

| उत्तर | संख्या | प्रतिशत |
|-------|--------|---------|
| हाँ | 88 | 88% |
| नहीं | 12 | 12% |

तालिका 20 के अनुसार, 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं में से 88% का मानना है कि उच्च शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम है, जबकि 12% इससे सहमत नहीं हैं। यह परिणाम स्पष्ट करता है कि अधिकांश छात्राएँ शिक्षा को आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान एवं सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन मानती हैं। उच्च शिक्षा के माध्यम से वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और जीवन में बेहतर अवसर प्राप्त करती हैं। हालाँकि, 12% छात्राओं का असहमति जताना यह संकेत देता है कि कुछ मामलों में सामाजिक एवं व्यक्तिगत परिस्थितियाँ अभी भी सशक्तिकरण की प्रक्रिया को सीमित करती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के डेटा विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उमरिया जिले की अनुसूचित जाति की छात्राओं के जीवन में उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी भूमिका निभा रही है। उच्च शिक्षा के माध्यम से छात्राओं के आत्मविश्वास, सामाजिक सम्मान एवं स्वतंत्रता की भावना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे उनके व्यक्तित्व विकास एवं सामाजिक सहभागिता में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके साथ ही यह भी सामने आया कि आर्थिक बाधाएँ, शैक्षणिक संसाधनों की कमी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव अभी भी उनकी प्रगति में प्रमुख अवरोध के रूप में विद्यमान हैं। यद्यपि सरकारी योजनाओं का कुछ हद तक लाभ छात्राओं को प्राप्त हो रहा है, फिर भी जागरूकता के अभाव एवं क्रियान्वयन की सीमाओं के कारण सभी छात्राएँ इनका पूर्ण लाभ नहीं उठा पा रही हैं। इसके बावजूद, अधिकांश छात्राओं में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है और वे इसे अपने सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम मानती हैं। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा अनुसूचित जाति की छात्राओं के जीवन में व्यापक परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है, किन्तु इसके पूर्ण प्रभाव के लिए सामाजिक एवं आर्थिक बाधाओं को दूर करना अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन, जिसमें उमरिया जिले के 5 महाविद्यालयों की 100 अनुसूचित जाति की छात्राओं को आधार बनाया गया, यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उच्च शिक्षा उनके जीवन में बहुआयामी सकारात्मक परिवर्तन ला रही है।

अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के अनुसार यह पाया गया कि अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षणिक स्थिति में सुधार हो रहा है तथा वे बड़ी संख्या में उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हो रही हैं, जिनमें अधिकांश प्रथम पीढ़ी की शिक्षार्थी हैं। द्वितीय उद्देश्य के संदर्भ में यह निष्कर्ष सामने आया कि उच्च शिक्षा ने छात्राओं के सामाजिक सम्मान, आत्मविश्वास एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि की है, साथ ही रोजगार के अवसरों एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में भी सकारात्मक प्रभाव डाला है। तृतीय उद्देश्य के अंतर्गत यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा अनुसूचित जाति की छात्राओं के सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम है, जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं तथा समाज में अपनी पहचान स्थापित कर रही हैं। हालाँकि, चतुर्थ उद्देश्य के अनुसार अध्ययन में यह भी पाया गया कि आर्थिक कठिनाइयाँ, संसाधनों की कमी, सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव जैसी बाधाएँ अभी भी उनकी शैक्षणिक प्रगति में अवरोध उत्पन्न कर रही हैं।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ भी इस विश्लेषण से पुष्ट होती हैं कि उच्च शिक्षा वास्तव में अनुसूचित जाति की छात्राओं के सशक्तिकरण में सकारात्मक भूमिका निभा रही है, परन्तु आर्थिक एवं सामाजिक बाधाएँ इसकी पहुँच एवं प्रभाव को सीमित करती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा एक सशक्त साधन है, किन्तु इसके पूर्ण लाभ के लिए सहायक परिस्थितियों का निर्माण आवश्यक है।

सुझाव:

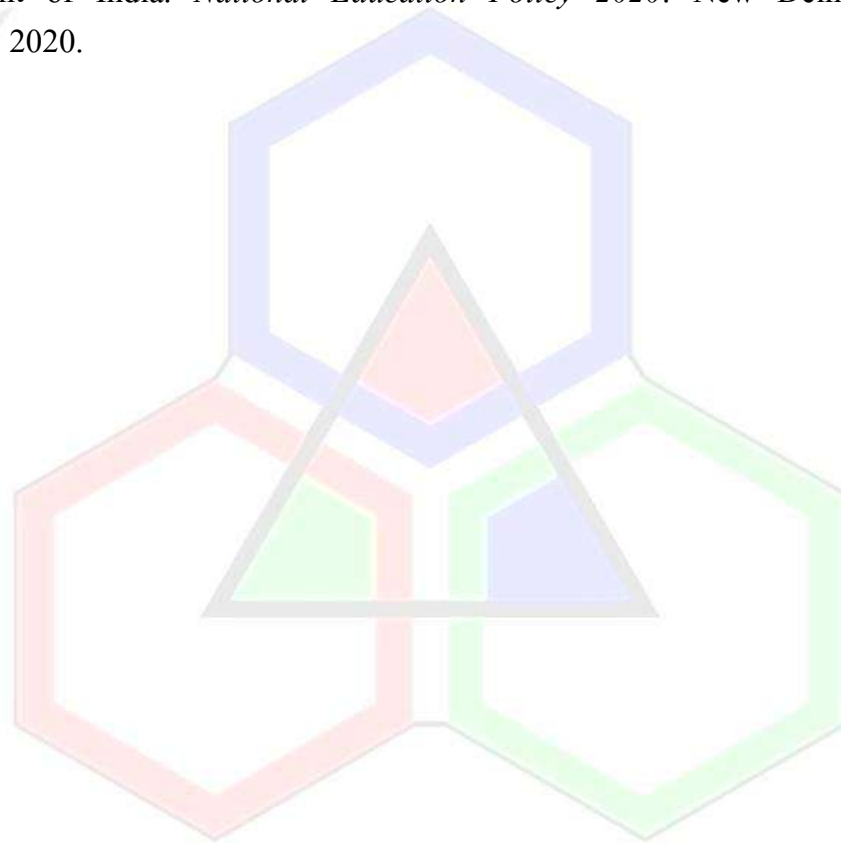
अध्ययन के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तावित हैं

1. **आर्थिक सहायता का विस्तार:** अनुसूचित जाति की छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा एवं अन्य आर्थिक सहायता योजनाओं का दायरा एवं राशि बढ़ाई जाए, ताकि आर्थिक बाधाओं को कम किया जा सके।
2. **जागरूकता कार्यक्रम:** महाविद्यालय एवं पंचायत स्तर पर सरकारी योजनाओं एवं शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता अभियान चलाए जाएँ, जिससे अधिक छात्राएँ लाभान्वित हो सकें।
3. **शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता:** ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय, डिजिटल लैब एवं इंटरनेट सुविधाओं का विस्तार किया जाए, ताकि छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।
4. **परामर्श एवं मार्गदर्शन:** छात्राओं के लिए करियर काउंसलिंग एवं मेंटरशिप कार्यक्रम संचालित किए जाएँ, जिससे वे अपने भविष्य के प्रति स्पष्ट दिशा प्राप्त कर सकें।
5. **सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन:** समाज एवं परिवारों को जागरूक किया जाए कि वे छात्राओं की शिक्षा में सहयोग करें और पारंपरिक रूढ़ियों को त्यागें।
6. **सुरक्षा एवं परिवहन सुविधा:** छात्राओं के लिए सुरक्षित परिवहन एवं छात्रावास सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ, ताकि वे बिना किसी बाधा के शिक्षा प्राप्त कर सकें।
7. **नीतिगत सुधार:** सरकार द्वारा योजनाओं के क्रियान्वयन को पारदर्शी एवं सरल बनाया जाए, जिससे सभी पात्र छात्राएँ उनका लाभ आसानी से प्राप्त कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. Patwardhan, Sunanda. Change Among India's Harijan: Maharashtra – A Case Study. New Delhi: Orient Longman Limited, 1973.
2. Chauhan, B. R. “Problem of Education Among Scheduled Caste Students in U.P.” Social Change, vol. 6, no. 1–2, 1967, pp. 13–17.
3. Singh, N. Of. Education and Social Change. Jaipur: Rawat Publications, 1979.
4. Lawrence, A. S., and C. Bharathi. “Parental Encouragement in Relation to Academic Achievement of Higher Secondary School Students.” Online Submission, vol. 2, no. 6, 2016, pp. 1234–1239.
5. दिलीप कुमार. मुद्दे और चुनौतियाँ : भारतीय उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति की पहुँच“ . इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT) , vol. 9, no. 9, Sept. 2021, ISSN 2320-2882.
6. https://n20.ncert.org.in/degsn/pdf/Training_Module_for_Quality_Education.pdf
7. Ambedkar, B. R. *Annihilation of Caste*. New Delhi: Navayana Publishing, 2014.

8. Guru, Gopal. *Dalit Women: The Question of Identity*. New Delhi: Oxford University Press, 2009.
9. Sharma, Kumud. *Women and Education in Rural India*. New Delhi: Deep & Deep Publications, 2010.
10. University Grants Commission (UGC). *Annual Report on Higher Education*. New Delhi: UGC, 2018.
11. Government of India. *National Education Policy 2020*. New Delhi: Ministry of Education, 2020.



IJCRTA